The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

संस्कृति एवं पर्यावरण का समाज शास्त्रीय अध्ययन के सन्दर्भ में

राम नरेश

शोध-छात्र

महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड,
विश्वविद्यालय बरेली (उ० प्र०)

संस्कृति एवं पर्यावरण मानव समाज को निर्मित करते हैं, जिसके अभाव में, सम्पूर्ण समाज का स्वस्थ निर्माण होना असम्भव है। संस्कृति एवं पर्यावरण एक सभ्य समाज की पोषिका है जिसके संरक्षण मे मनुष्य का पालन होता है हर्षकोविट्स ने लिखा है " संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित है| उक्त कथन के आधार पर सिद्ध होता है कि पर्यावरण के बिना संस्कृति का उद्भव एवं विकास सम्भव नही है। स्वस्थ पर्यावरण स्वस्थ संस्कृति को जन्म प्रदान करता है।

भारतीय समाज की संस्कृति अति प्राचीन है जिसको परम्परागत रूप से शाश्वत प्रकृति से जोड़ा जाता है। सनातन प्रकृति पर हिन्दू धर्म पराकाष्ठा पर है। जिसमे जन्म से लेकर मोक्ष को प्राप्त करना उद्देश्य अन्तर्निहित है। सनातन संस्कृति हिन्दू धर्म एक व्यापक जीवन पद्धति है, जिसमे समग्र दैवीय सत्ता कण-कण में विराजमान है। सम्पूर्ण मानव जीवन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर आधारित है। जिसको सनातन संस्कृति एवं हिन्दू धर्म मे पुरुषार्थ के रूप मे वर्णित किया गया।

धर्म का आश्रय लेने से पहले सच्ची संस्कृति एवं पर्यावरण का अनुसरण करना होगा और उसके साथ-साथ सनातन साहित्य, वेद, उपनिषद, पुराण एवं वेदांगो का आत्मिक दर्शन करना पड़ेगा। जिसकी अनुभूति संस्कृति एंव पर्यावरण को संरक्षित रखने का प्रादुर्भाव करेगी।

वैदिक साहित्य एवं वैदिक काल का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि समस्त समाज वनस्पति पर आधारित समाज था। अथर्ववेद में स्पष्ट वर्णित है कि - "भूमिष्टता पातु हरितेन "अर्थात भूमिहरेपन से सम्पूर्ण समाज के जीवधारियों की रक्षा करेगी जिससे मंगलकारी समाज का निर्माण होगा। सनातन संस्कृति एवं पर्यावरण के समन्वय में वन, नदी, पहाड़ और वृक्षों आदि को सम्मिलित किया गया। अनेक पर्वो पर विभिन्न परम्परायें स्थापित हैं

2.

जिनका सम्बन्ध वृक्षों से है जैसे कल्पवृक्ष, मंदार, पारिजात, आम और नीम आदि है। बरगद वृक्ष शिव, पीपल वृक्ष विष्णुहरि और मंदार का वृक्ष दैवीय या जीवितसत्ता का परिचायक और बाधाओं को दूर करने में सहायक है। आम की लकड़ी धार्मिक सिद्धात्तों के आधार, हवन, यज्ञ आदि के लिए प्रयोग में लायी जाती है जिसके अग्निकुण्ड में जलने से देवी एवं देवता मंगलकारी कार्य के लिए आशीर्वाद प्रदान करते हैं। मानव एवं समस्त जीवधारियों सकारात्मक उर्जा मिलती है। नीम के वृक्ष में शक्ति स्वरुपा दुर्गा का स्वरूप विद्यमान माना जाता है।

श्रीकृष्ण ने गीता में स्वयं कहा है कि वृक्षों में मैं पीपल हूँ। पशुओं में कामधेनु हूँ और जंगली जानवरों में ऐरावत हाथी हूँ जिससे अनुमान है कि प्रत्येक संस्कृति के निर्माण में पर्यावरण का विशेष महत्व एवं अस्तित्व है। ईश्वर तो नहीं लेकिन ईश्वर का अंश विदमान है।

समग्र ब्रह्माण्ड के जीवधारी सूर्य की किरणों द्वारा पोषित है। जल द्वारा परिवर्द्धित और वर्षा द्वारा सिंचित औषधियों और अन्न से अपनी बीमारी एवं भूख को शान्त करता है।

‘’पुराणों के अनुसार- पुलस्त्य ऋषि ने भीष्म पितामह से वृक्ष लगाने के लिए अग्रसारित उपदेश दिये। वृक्षों का जीवन में विशेष महत्व बताया कि पीपल का वृक्ष लगाने से अकेला हजार पुत्रो का फल और पिण्ड दान प्रदान करता है। अतः भीष्म बलपूर्वक वृक्ष लगाओ। पीपल का वृक्ष लगाने से समाज समृद्ध एवं निरोगी बनता है। अशोक का वृक्ष दुःख का नाश करता है। अनार का वृक्ष पत्नी प्रदान करने वाला, जामुन का वृक्ष कन्या प्रदान करने वाला, खैर एवं चन्दन का वृक्ष निरोगी रखता है। बेल और बरगद में शिव भोले नाथ का निवास तथा गुलाब में पार्वती का निवास विद्यमान माना गया।

पद्मपुराण में तुलसी पौधा का विशेष महत्व बताया गया है। कि प्रत्येक हिन्दू व्यक्ति के गले में तुलसी का माला, भोजन एवं पानी में तुलसी की पत्ती और विष्णु की पूजा में अनिवार्य रूप से तुलसी को पत्ती एवं गंगा जल को बताया गया है। जिससे विष्णु भगवान प्रशन्न होते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासांगिक श्लोक में तुलसी पौधे का महिमान्वित वर्णन किया गया कि कलयुग में तुलसी का पूजन, कीर्तन, ध्यान, रोपण और धारण करते से पाप को नष्ट करती और स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करती है।

3.

पूजने, कीर्तने, ध्याने, रोपणे धारणे कलौ ।

तुलसी दहते पापं स्वर्ग मोक्षं ददाति च ॥

तुलसी विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण है जिसका औषधीय रूप से विभिन्न रोगो को दूर करती है। हृदय रोग विदारक, कुष्ठविनाशक, रक्त विकार नाशक, मूत्र विकार को ठीक करना एवं बात, कफ और पित्त निवारक एवं अन्य रोग विनाशक के रूप में कार्य करती है।

आँवला वृक्ष का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है जिसका प्रयोग औषधि के रूप में किया गया। अतीत काल में ऋषि-मुनियों का वन में निवासस्थान होते थे उनका जीवन वृक्ष और उनके फलो पर आधारित होता था। आँवला का फल, चूर्ण का सेवन ऋषि-मुनि करके सैकड़ो वर्ष साधना करके जीवन का निर्वाह करते थे। आँवला वृक्ष का पूजन दीर्घ आयु का आशीर्वाद एवं लक्ष्मी का निवास स्थान का उल्लेख मिलता है |

भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में गंगा और यमुना नदियों का विशेष महत्व है। श्रीमद्भागवत में गंगा जी का मृत्युलोक पर भागीरथ द्वारा लाने पर विशेष तप, त्याग और अनुष्ठान करना पड़ा। आधुनिक समय में गंगा पवित्रता का प्रतीक एवं शुभ या अशुभ कार्यों में संस्कृति का परिचायक है।

यमुना जी को यमराज की बहन माना जाता है। बृज मे कार्तिक मास मे यमदूतिया के दिन भाई और बहन यमुना में एक साथ डुबकी लगाते हैं| जनरीति के आधार पर विश्वास करते हैं कि मृत्यु के समय यमराज का सामना नही करना पड़ता है।

प्रेम सागर पुस्तक श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०52) ए/2, अक्कड़ नगर, इलाहाबाद- ३(उ0 प्र0) से प्रकाशित पृष्ठ संख्या 20 में श्रीकृष्ण जन्म में होने के उपरान्त श्री वसुदेव यमुना जी को पार करते समय यमुना का महिमान्वित उल्लेख मिलता है। जिससे संस्कृति का सकारात्मक एवं उर्जावान स्वरूप का दर्शन होता है।

सनातन संस्कृति एवं धर्म गऊ पूजा, ब्राह्मण पूजा, सन्त, ऋषियों-मुनियों का सम्मान एवं प्रकृति पर विश्वास की परम्परा रही है। गऊ का दूध, घृतः अमृत के समान माना गया और गोबर से गृह एव स्थान का लेपन करना पवित्र माना गया। गाय को पृथ्वीस्वरूप तथा बैल को धर्म का आधार प्रदान किया गया। पशुपति नाथ के नन्दी का पूजन सर्वोपरि है। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, ग्रह-नक्षत्र वायु, अग्नि, जल, तारे और अन्न आदि का पूजन मंगलकारी एवं कल्याणकारी बताया गया है |

भारत सरकार के प्रधानमंत्री मा० नरेंद्र दामोदर मोदी जी ने भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संकल्प लिया है। जिसका पालन कर रहे जिसमे भारत ही नही सम्पूर्ण विश्व सनिहित है। भारतीय महिला समाज का चरित्र उज्ज्वल करने का काम किया। साथ ही साथ 'दलित, शोषितों को भारतीय संस्कृति से जोड़ने का काम किया।

. उ० प्र० सरकार के मुख्य मंत्री योगी आदित्य नाथ जी सनातन धर्म / संस्कृति का नेतृत्व कर रहे जिनका मानना है सनातन धर्म प्राचीन धर्म है जिसका पालन शश्वत के रूप माना| बहन बेटी, और रोटी से खिलवाड़ करने वालों पर किसी प्रकार बर्दाश्त नही किया जायेगा संस्कृति संरक्षण एवं स्वयं संस्कृति का अंग स्थापित किये है। संस्कृति एंव पर्यावरण को अतीत से जोड़ना चाहते है और भविष्य से समन्वय स्थापित करना चाहते है।

सुझाव. संस्कृति एवं पर्यावरण को प्रदूषित और विकृत करने वाला व्यक्ति समाज के लिए घातक साबित होता है। उसके सुधार में सरकार एवं समाज के प्रबुद्ध वर्ग दण्डनीय कार्य प्रणाली का उचित प्रयोग करें। संस्कृति एवं पर्यावरण के समर्थन में वैज्ञानिक पक्षों पर विशेष बल प्रदान करें। आधुनिकीकरण को विशेष वरीयता परन्तु पश्चिमी संस्कृति पर आँख बन्द करके भरोसा नही करना जो भारतीय संस्कृति के खिलाफ है। जिससे पश्चिमी संस्कृति पर्यावरण चेतना पर आधात आघात न कर सके। प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्यनिहित है, कि वह सनातन संस्कृति एवं पर्यावरण को विनष्ट होने बचाये जो एका अमूल्य धरोहर के रूप है। सनातन संस्कृति एवं पर्यावरण को विनष्ट करके विकसित राष्ट्र का निर्माण करना राष्ट्र हित में कल्याणकारी सम्भव नहीं है। राष्ट्र के निर्माण में प्रकृति एवं पर्यावरण का सराहनीय योगदान होता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1- डा0 दिनेशमणि, पर्यावरण और बढ़ता प्रदूषण पृष्ठ 26, 27

2. बंदना बोहरा पर्यावरणीय समाजशास्त्र संक्षिप्त अध्ययन ओनेना पब्लिकेशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008

3- डा० अलका रानी उत्तराखण्ड परियोजना कार्य-समाजशास्त्र, धानी प्रकाशन

मन्दिर प्रथम संस्करण 2010

4- डा० नरेन्द्र नाथ सिंह - साहित्य एवं संस्कृति में पर्यावरणीय संवेदना प्रकाशन हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय नैनी इलाहाबाद-2011

5-E. B. Tylor, Primitive culture P. 4.

6- Broom and Selznick, Principles of sociology P.50

7- Maciver and page, Society p. 499

8- M.T. Harshkovits, man and his works (1995)

THE RESEARCH DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/23

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

राम नरेश

For publication of research paper title

संस्कृति एवं पर्यावरण का समाज शास्त्रीय अध्ययन के सन्दर्भ में

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com